।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2021-23

दयानन्दाब्दः 199
मानव सृष्टि सं. : 1960853124
सृष्टि सं.: 1972949124

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/— आजीवन : रू.1100/— वार्षिक शुल्क : रू.100/— (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-22 | अंक-01 | मिति चैत्र शुक्ल एकादशी से चैत्र कृष्ण अष्ठमी तक 2080 विक्रमी | 16 से 31 मार्च 2023 अमरोहा (उ.प्र.) | मूल्य : प्रति -5/-

MDH

महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) ली०

SCAN TO VISIT MDH SPICES OFFICIAL YOUTUBE CHANNEL

In celebration of

MAHASHAY DR DHARAM PAL GULATI JI

PADAM BHUSHAN AWARDEE BY GOVT OF INDIA

on his 100th BIRTH ANNIVERSARY on 27 March 2023

WATCH ON MDH SPICES OFFICIAL YOUTUBE CHANNEL /MDHSPICESOFFICIAL

पूरी दुनिया में भारतीय मसालों को पहचान दिलाने वाले महर्षि दयानन्द के परम अनुयायी, नित्य यज्ञ करता, कर्मयोगी, पद्म भूषण से सम्मानित महाशय धर्मपाल जी के सौवें जन्मदिन पर MDH परिवार आप सब का हार्दिक आभार व्यक्त करता है

Mahashay Rajeev Gulati
Chairman MDH

Jyoti Gulati
Director MDH

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट एवं महाशय धर्मपाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं संवर्धित संस्थान :

- महाशियां दी हट्टी प्रा0 लि0, (दिल्ली, गुड़गांव, फरीदाबाद कुंडली, नागौर)
- सुपर डेलीकेसीज प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
- माता चन्नन देवी अस्पताल, (जनकपुरी, नई दिल्ली)
- एम.डी.एच. इंटरनैशनल स्कूल (जनकपुरी एवं द्वारका, नई दिल्ली)
- महाशय चूनीलाल सरस्वती बाल मंदिर (हरी नगर, नई दिल्ली)
- माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर (टेगौर गार्डन, नई दिल्ली)
- महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर (बेदगी, कर्नाटक)
- श्री संजीव गुलाटी चिकित्सालय एवं शोध केन्द्र (ऋषिकेश)
- माता लीलावंती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केंद्र (उदयपुर, राजस्थान)
- माता चन्नन देवी आर्य कन्या गुरूकुल, (पिल्लु खेड़ा, हरियाणा)
- महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन (आसाम, एम.पी., झारखण्ड एवं नागालैण्ड)
- एम.डी.एच. गऊशाला (अजमेर, नागौर–राजस्थान)
- माता लीलावंती श्री कृष्ण वैदिक कन्या विद्यालय (खुशीपुरा, मथुरा)
- एम.डी.एच. परिसर निर्वाण न्यास (अजमेर, राजस्थान)
- महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउण्डेशन (कालीकट, केरल)
- महाशय धर्मपाल हार्ट इंस्टीट्यूट (जनकपुरी, नई दिल्ली)
- एम.डी.एच. पार्क,(नागौर)
- महाशय धर्मपाल अंतरराष्ट्रीय अतिथि गृह, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली
- महाशय संजीव कुमार धर्मार्थ औषधालय, नालागढ़ (हिमाचल)
- महाशय धर्मपाल यज्ञशाला आर्य समाज, त्रिनगर, नई दिल्ली
- महाशियां दी हट्टी प्रा0 लि0, (दिल्ली, गुड़गांव, फरीदाबाद
- महाशय धर्मपाल स्वावलंबन गृह, सिरसा जेल, सिरसा (हरियाणा)
- महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सर्वोदय विद्यालय मलारना चौड़ (राजस्थान)
- गुरुकुल यमुनावट मंझावली फरीदाबाद (हरियाणा)
- महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सर्वोदय विद्यालय एवं वैदिक शोध केंद्र हल्दीघाटी मार्ग उदयपुर
- महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. सर्वोदय विद्यालय एवं वैदिक शोध केंद्र नागोर
- श्री सत्य सनातन वेद मंदिर रोहिणी नई दिल्ली
- स्वामी आत्मानंद वैदिक गुरुकुल मलारना चौड़ जिला सवाई माधोपुर (राजस्थान)
- आर्यवीर दल उत्तर प्रदेश, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृंदावन
- श्री गोपाल गौशाला लोहारू, भिवानी (हरियाणा)
- महाशय धर्मपाल ओपन एअर थियेटर, भिवानी जेल (हरियाणा)
- महाशय धर्मपाल चेरिटेबल ट्रस्ट टंकारा (गुजरात)
- महाशय धर्मपाल चेरिटेबल ट्रस्ट अजमेर (राजस्थान)
- महात्मा रामलाल ट्रस्ट इंदरपुरी (दिल्ली)
- सनातन धर्म मंदिर गुरुग्राम
- महाशय धर्मपाल संस्कृत भवन गुरू विरजानंद संस्कृत कुलम हरी नगर, नई दिल्ली
- युगपुरुष महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.) चेरिटेबल भवन एवं डायग्नोस्टिक सेंटर X-25 कड़कड़डूमा इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली
- युगपुरुष संत महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.) चेरिटेबल कैंसर निदान सहयोग हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर X-25 कड़कड़डूमा इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली
- युगपुरुष संत महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.) आयुर्वेदिक, पंचकर्मा, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य वर्धक एवं रोग निवारण धर्मार्थ संस्थान, खसरा नं 259, 275, 276, ग्राम ईशाक नगर, तहसील मोदीनगर, जिला गाजियाबाद यूपी
- विश्वारा कन्या गुरुकुल रुड़की जिला रोहतक (हरियाणा)
- श्री मद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा, (उत्तर प्रदेश)
- संजीव गुलाटी स्मृति चिकित्सालय वन्देमातरम कुंज गंगा भोगपुर तल्ला पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)
- महर्षि दयानन्द वेद–विद्या आर्य गुरुकुल नली खुर्द (करनाल)
- श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय 119, गौतम नगर नई दिल्ली
- श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)
- बाबा ब्रह्मदास गऊशाला (जीन्द) हरियाणा
- बाबा जमीन नाथ गऊशाला सेवा समिति (जीन्द) हरियाणा
- जय बाबा मन्सानाथ गऊशाला, छात्तर
- जय बाबा धुणेवाला विकलांग गऊशाला समिति (जीन्द) हरियाणा
- श्री कृष्ण गोशाला, नगूरां (जीन्द) हरियाणा
- नन्दीशाला सेवा संघ, उचाना मण्डी (जीन्द) हरियाणा
- श्री गौशाला बाबा फुल्लू साध (जीन्द) हरियाणा
- जय दादा खेड़ा गऊशाला समिति (जीन्द) हरियाणा
- बाबा दलीप गिरी डेरा गऊशाला समिति (जीन्द) हरियाणा
- श्रीमद्दयानंद उत्कर्ष आर्य कन्या गुरुकुल मेरठ
- आर्य समाज, विजयनगर, (अजमेर) राजस्थान
- महर्षि दयानन्द आर्य गुरुकुल एवं गोशाला भादस जिला मेवात (हरियाणा)
- हवन उत्थान जन कल्याण समिति (पंजी0) मण्डावली, दिल्ली
- महर्षि पंतजलि इण्टरनेशनल योग विद्यापीठ, मुज्फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
- आर्यवर्त खेल महासंघ जहांगीरपुरी, नई दिल्ली
- आर्य समाज (कोटपुतली) जिला–जयपुर, राजस्थान
- महर्षि दयानन्द सेवासमिति (पं.) जनपद एटा, उत्तर प्रदेश
- आर्य समाज निरसा धनबाद
- वेदविद्या शोध संस्थान (न्यास) कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
- वेदविद्या आर्य गुरुकुलम कन्धमाल (ओडिशा)
- वानप्रस्थ साधक आश्रम साबरकांटा (गुजरात)

सम्पादकीय

श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त जीवनः मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

चैत्र शुक्ल नवमी आर्यों व हिन्दुओं का ही नहीं अपितु संसारस्थ सभी विवेकशील लोगों के लिए आदर्श मयार्दा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म दिवस पर्व है। इस पर्व को श्री रामचन्द्र जी के भक्त अपनी अपनी तरह से सर्वत्र मनाते हैं। हम वैदिक धर्मी आर्य हैं और मयार्दा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण किए हुए एक महान पुरुष हैं। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेदों द्वारा स्थापित सभी मयार्दाओं का पालन किया और यह सिद्ध किया कि वैदिक शिक्षायें केवल पुस्तकीय ज्ञान न होकर वह पूरी की पूरी जीवन में धारण व पालन करने योग्य है। श्री राम का जन्म दिवस पर्व चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी हमें यह अवसर देता है कि हम उनके जीवन के गुणों का चिन्तन व मनन करें और देखें की हममें उनकी तुलना में क्या कमियां हैं। यह मनुष्य जीवन सर्वव्यापक व सर्वज्ञ ईश्वर, जो श्री राम चन्द्र जी के भी उपास्य थे, ने हमें अन्यान्य वा सभी गुणों को धारण करने तथा असत्य व अवगुणों को छोड़ने एवं उन्हें दग्धबीज करने के लिए दिया है। जो ऐसा करते हैं वह ईश्वर के प्रिय बनते हैं और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन के ध्येय व लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। आज की आधुनिक संस्कृति खाओ, पीयो और जीओ में विश्वास रखती है। इसको मानने वाले लोग परजन्म में घोर अन्धकार को प्राप्त होकर जन्म व मृत्यु के बन्धन में पड़कर दुःखसागर में जन्म-जन्मान्तरों में अपने कर्मों का भोग करते हैं। वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त वह ज्ञान है जिससे मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति होती है। मयार्दा पुरुषोत्तम राम वह आदर्श मनुष्य वा महापुरुष थे जिन्होंने अपने जीवन को वेदमय बनाकर वेद की हर शिक्षा का यथावत् पालन किया था। हम यहां यह भी वर्णन कर दें कि श्री रामचन्द्र जी ईश्वर के अवतार नहीं अपितु ईश्वर के सच्चे भक्त, उपासक, आज्ञापालक, वैदिक गुणों के श्रेष्ठ आदर्श व उदाहरण तथा विश्व के सभी युवाओं व वृद्धों के सबसे बड़े रोल माडल वा आदर्श महापुरुष हैं। जो भी मनुष्य उनके जीवन को अपनायेगा वह इस संसार रूपी भवसागर में डूबेगा नहीं अपितु तैर कर पार लग सकता है। यह भी बता दें कि राम-राम के नाम का जप करने से लाभ नहीं होगा अपितु श्री रामचन्द्र जी जैसा बनने से ही हमें लाभ होगा। श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में जन्में थे। त्रेतायुग की अवधि 12.96 लाख वर्ष और द्वापर की 8.64 लाख वर्ष होती है। इस दृष्टि से श्री रामचन्द्र जी का काल न्यूनतम 8.64 वर्ष से लेकर 21.60 लाख वर्ष के बीच होता है। इतने वर्ष पूर्व ही महर्षि बाल्मीकि जी हुए थे। वह ऋषियों के समान एक एक ऋषि और योगी थे और अपने ऋषित्व व योगबल से अतीत की बातों को प्रत्यक्ष करने की क्षमता रखते थे। संस्कृत में काव्य रचना का गुण उन्हें परमात्मा से प्राप्त हुआ था और श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर रामायण की रचना की प्रेरणा भी ईश्वर से ही मिली थी, ऐसा हमारा अनुमान है। उन दिनों देश में एक नारद मुनि होते थे जो अन्य लोकों सहित पूरी पृथिवी का भ्रमण करते रहते थे। सभी देशों के इतिहास का उन्हें ज्ञान था और प्रायः सभी विद्याओं में वह निपुण थे। एक समय ऐसा आया कि नारद जी महर्षि बाल्मीकि जी के आश्रम में पहुंच गये और दोनों के मध्य वातालाप हुआ। इस अवसर का लाभ उठाकर महर्षि बाल्मीकि जी ने नारद जी से प्रश्न किये। उन्होंने उनसे पूछा कि हे मुनिवर ! इस समय संसार में गुणवान्, पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवक्ता और अपने व्रत में दृढ़ पुरुष कौन है? सदाचार से युक्त सब प्राणियों के कल्याण में तत्पर, विद्वान्, सामर्थ्यशाली और देखने में सब से सुन्दर पुरुष कौन है? जो तपस्वी तो हो परन्तु क्रोधी न हो। तेजस्वी तो हो परन्तु ईष्यार्लु न हो और इन सब दया, अक्रोध आदि गुणों से युक्त होते हुए भी जब रोष आ जाये तो जिस के सामने देवजन भी कांपने लगें। हे तपेश्वर ! यदि आप किसी ऐसे महापुरुष को जानते हों तो उस का वृत्तान्त मुझ को बताइये क्योंकि आप त्रिलोक भ्रमण करने वाले हैं।ह्न बाल्मीकि जी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए नारद जी ने कहा कि बाल्मीकि जी ! अयोध्या में इक्षवाकु वंश मे उत्पन्न हुआ राम नाम से जो प्रसिद्ध राजा राज करता है, वह उन सब गुणों से युक्त है जिनका आपने उल्लेख किया है। नादर मुनि जी ने राम का तब तक का सम्पूर्ण जीवन चरित्र भी संक्षेप में बाल्मीकि जी को सुना वा बता दिया। रामचन्द्र जी की जयन्ती रामनवमह्न के पवित्र पर्व के अवसर पर हमारा कर्तव्य है कि हम इसे शिक्षाप्रद रूप से श्रद्धापूर्वक मनायें जिससे सर्वसाधारण का पथप्रदर्शन हो। आज के दिन मयार्दा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन वा स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा को प्रचारित करना चाहिये। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिए और अपने पूर्व पुरुषों के पदचिन्हों पर चलते हुए धर्म के तीनों स्कन्ध यज्ञ, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही इस व ऐसे अन्य शुभ दिनों को बिताना चाहिये। ऐसा करके ही हम अपनी उन्नति करते हुए दूसरों के उद्धार के आधार बन सकेंगे। ओ३म् शम्।

अतिथि सम्पादकीय : -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

126वें बलिदान दिवस पर

प. लेखराम जी अपने यशः शरीर से आज भी जीवित हैं

पं. लेखराम जी वैदिक धर्म एवं संस्कृति सहित ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अपने जीवन में जो कार्य किये उनके कारण वह आज भी अपने यशः शरीर से जीवित हैं। पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म का परिचय पाकर उसे पूरी तरह से अंगीकार किया था। वह अजमेर में ऋषि दयानन्द जी से मिले थे और वहां उनसे प्रश्न भी किये थे। यह वातार्लाप पं. लेख राम जी के जीवन चरित्र में उपलब्ध होता है। पं. जी ने प्राणपण से वैदिक धर्म का प्रचार किया था। वह एक निर्भीक एवं साहसी धर्म प्रचारक थे। उन्हें वैदिक धर्म के सिद्धान्तों, मान्यताओं एवं परम्पराओं का तलस्पर्शी ज्ञान था। पंडित जी ने अपने जीवन काल में अनेक स्वधर्मी बन्धुओं को विधर्मी होने से बचाया। उनके समय में विधर्मी स्वधर्म के अनुयायी बन्धओं का लोभ एवं छल-बल से धर्मान्तरण किया करते थे। ऋषि दयानन्द का सन् 1863 में आविर्भाव होने पर उन्होंने तर्क देकर वैदिक धर्म की सर्वोत्तमता व श्रेष्ठता को सिद्ध किया था। इसे सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में भी देखा जा सकता है।

पंडित जी को जहां कहीं से भी आर्य वा हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की सूचना मिलती थी वह तत्काल वहां पहुंचने का प्रयास करते थे और अपने बन्धुओं को अपनी धर्म की श्रेष्ठता बताकर उन्हें विधर्मी होने से रोकते थे। वह विधर्मियों से शास्त्रार्थ करने की उच्चस्तरीय योग्यता भी रखते थे। विधर्मी उनके वैदिक धर्म व इतर मतों के उच्च स्तरीय ज्ञान के कारण उनके सम्मुख अपने मत की उत्तमता को सिद्ध नहीं कर पाते थे। उनके जीवन में इस विषय के अनेक प्रसंग है। इसके लिए पाठकों को पंडित जी का स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी रचित जीवन चरित्र देखना चाहिये।

पंडित लेखराम जी ने एक महान कार्य यह किया कि उन्होंने ऋषि दयानन्द की सन् 1883 में मृत्यु के पश्चात देश के उन सभी स्थानों पर जाकर जहां जहां महान् ईश्वरभक्त ऋषि दयानन्द जी गये थे, उनके जीवन की घटनाओं का संग्रह किया और उस एकत्र सामग्री के आधार पर ऋषि दयानन्द का वृहद जीवन चरित्र लिखा। यही जीवन चरित्र बाद के ऋषि दयानन्द जी के सभी जीवनीकारों के लिए उनके जीवन चरितों की रचना का आधार बना। पंडित जी ने बड़ी संख्या में वैदिक धर्म पर ग्रन्थ भी लिखे हैं। उनके सभी ग्रन्थ कुलियात आर्य मुसाफिर ग्रन्थावली में एक साथ प्रकाशित हुए हैं। इस ग्रन्थ का नया संस्करण प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के सम्पादन में परोपकारिणी सभा, अजमेर से दो खण्डों में प्रकाशित होकर उपलब्ध है।

पंडित लेखराम जी को ऋषि दयानन्द जी ने अजमेर में 25 वर्ष की आयु पूर्ण होने के बाद विवाह करने की सलाह दी थी। पंडित जी ने ऋषि के इस परामर्श का पालन किया था। उन्होंने माता लक्ष्मी देवी जी से विवाह किया था। लक्ष्मी देवी जी विवाह से पूर्व पढ़ी लिखी नहीं थी। विवाह के बाद पंडित जी ने उन्हें पढ़ाया और उन्हें वैदिक धर्मी बनाया था। माता लक्ष्मी देवी जी की भी वैदिक धर्म पर अगाध श्रद्धा थी। धर्म प्रचार की धुन में पंडित जी अत्यन्त व्यस्त रहते थे। वह अपने एकमात्र पुत्र का ध्यान नहीं रख सके थे। शैशवावस्था में ही उसका निधन हो गया था। इस पर भी उनके धर्म प्रचार के कार्यों में कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ और न ही धर्म प्रचार व धर्म कार्यों में किसी प्रकार की कोई कमी आई। पंडित लेखराम जी के जीवन में अर्थ शुचिता के भी अनेक उदाहरण पाये जाते हैं। वह आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रचारक थे। वह जब प्रचार के लिये बाहर के स्थानों पर जाते थे तो अपने यात्रा बिल में उन स्थानों का कि राया सम्मिलित नहीं करते थे जहां उनका अपना कोई निजी काम होता था। एक बार पण्डित जी को पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहीं प्रचार के लिए भेजा था। लौटकर उन्होंने अपना यात्रा बिल जमा किया। उस बिल में उन्होंने एक ओर का किराया ही भरा था। पंजाब सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी के पूछने पर उन्होंने कहा कि जिस स्थान पर उन्हें भेजा गया था वहां उनका भी एक निजी काम था। इसलिए उन्होंने बिल में एक तरफ का किराया ही सम्मिलित किया है। यही उचित है।

उनके जीवन का एक प्रेरक प्रसंग यह है कि एक बार यात्रा में लम्बी अवधि तक व्यस्त रहने के कारण उनके वस्त्र मैले हो गये थे। वह स्वामी श्रद्धानन्द जी, जो पंजाब सभा के प्रधान और उनके मित्र भी थे, के पास पहुंचे और उनसे उनका स्वच्छ कुर्ता लिया। उस कुर्ते को उन्होंने स्वामी जी के सामने ही भीतर पहना और बाहर मैला कुर्ता पहन लिया। यह देखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रश्न किया जिसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि स्वच्छ वस्त्र ही शरीर के सम्पर्क में होने चाहिये। इस कारण उन्होंने स्वच्छ वस्त्र को भीतर पहना था।

पंडित लेखराम जी लाहौर में रहते थे। वह ऋषि दयानन्द के जीवन पर स्वयं संग्रहीत सामग्री पर आधारित जीवन चरित्र लिख रहे थे। एक विधर्मी उनके पास धर्म जिज्ञासा की इच्छा लेकर आया था और कुछ दिन से उनके साथ साथ था। एक दिन मौका देखकर उसने अपनी ओढ़ी हुई चादर में से खंजर निकाल कर उसे उनके पेट में घोप दिया था। बलिदान से पूर्व पण्डित जी ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिख रहे थे। वह लेखन का कार्य पूरा कर उठे ही थे और उन्होंने अंगड़ाई ली थी। तभी वहां उपस्थित उस विधर्मी ने अपनी कटार को उनके पेट में घोप कर उनका बलिदान कर दिया था। यही घटना ऋषिभक्त धर्मवीर पंडित लेखराम जी की मृत्यु का कारण बनी थी। उस दिन 6 मार्च 1897 का दिवस था। आज पंडित लेखराम जी के बलिदान को 125 वर्ष पूरे हो गये हैं। पं. लेखराम जी का बलिदान वैदिक धर्मियों को वेद प्रचार करने और धर्म के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने की प्रेरणा करता है। हम आज पंडित जी के बलिदान दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि सभी वैदिक धर्मी अपने मतभेदों को भुलाकर एक हो जायें और वैदिक धर्म का प्राणपण से प्रचार कर संसार को आर्य बनाने का भरसक प्रयत्न करें।

-मनमोहन कुमार आर्य

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

टंकारा में 15 एकड़ भूमि में बनेगा भव्य ऋषि स्मृति स्थल

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

टंकारा (राजकोट) गुजरात। दिनांक 12 फंरवरी से 18 फरवरी 2023 तक ऋषि जन्म भूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम मे हजारों की संख्या में आर्य जनों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढाय़ा। इस वर्ष भी इस बोधोत्सव को आर्य सन्देश टी वी चैनल के माध्यम से पूरे विश्व में देखा गया और इसके अतिरिक्त इसे अन्य 20 चैनलों पर भी लाखों की संख्या में ऋशि भक्तों ने देखा । उनमें बहुत से अतिवृद्ध थे, जो अभी तक टंकारा नहीं गए थे और टंकारा जाने का उनका स्वप्न पूरा नहीं हो रहा था । कुछ महानुभाव सीबीएससी की परीक्षा प्रारम्भ होने के कारण टंकारा नहीं जा सके थे।

यहां यजुर्वेद पारायण यज्ञ 12 से 18 फरवरी 2023 तक टंकारा स्थित उपदेषक विद्यालय के आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में हुआ। इस अवसर पर टंकारा में पधारे आर्य जनों एवं स्थानीय ऋशि भक्तों द्वारा श्री देव जी आर्य (टंकारा) के नेतृत्व में भव्य प्रभात फेरी भी निकाली गई । इसी अवसर पर दिनांक 16,17,18 फरवरी 2023 को योग एवं स्वास्थ्य सत्र का आयोजन स्वामी षान्तानन्द जी के नेतृत्व में बृजमोहन मुंजाल योग साधाना केन्द्र में प्रातः 5 बजे से सपन्न हुआ। दिनांक 17-02-2023 को प्रातः 8-00 बजे से टंकारा ट्रस्ट की मुख्य यज्ञषाला में यज्ञ आरम्भ हुआ । इस अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में श्री अरूण अब्रोल, श्री एस के षर्मा, श्री विपिन भाई वेलाणी परिवार, श्री महेष वेलाणी परिवार एवं श्री अरूण बहल परिवार के सदस्य उपस्थित थे ।

आचार्य रामदेव जी ने अपने प्रवचनों से यज्ञषाला में उपस्थित ऋशि भक्तों को लाभान्वित किया । तदुपरान्त टंकारा के ही पूर्व स्नातक श्री अंकित उपाध्याय (गुरूग्राम) के भजन प्रस्तुत किए गए और जिसकी सभी पधारे महानुभावों ने सराहना की । भजनों के उपरान्त आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसकी सभी महानुभावों ने भूरि भूरि प्रषंया की । तदुपरान्त टंकारा के आर्य वीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्षन एवं विभिन्न प्रकार के आसनों का प्रदर्षन किया गया और विजयी टीमों एवं प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किए गए ।

दिनांक 17-02-2023 को रात्रि 8 बजे वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत कार्यक्रम का आयोजन कार्यकारी प्रधान श्री योगेष मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ किया गया, जिसमें श्री अंकित आर्य के भजन प्रस्तुत किए ग्रए और आचार्य विश्णुमित्र वेदार्थी द्वारा प्रवचन किए गए ।

दिनांक 18-02-2023 प्रातः 6 बजे से टंकारा में पधारे आर्य जनों एवं स्थानीय ऋशि भक्तों द्वारा श्री देव जी आर्य (टंकारा) के नेतृत्व में प्रभात फेरी निकाली गई । तदुपरान्त प्रातः 10-30 बजे मुख्य यज्ञषाला में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान दिल्ली से पधारे टंकारा ट्रस्ट के प्रधान पद्मश्री डॉ0 पूनम सूरी जी सपत्नीक, आर्य प्रादेषिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं डी ए वी पब्लिकेषन के निदेषक श्री एस के षर्मा , डॉ0 अविनाष भट्ट, श्री विपिन भाई पटेल श्री विपिन उभाई वेलाणी एवं पिछले एक सप्ताह से चल रहे ऋग्वेद पारायण यज्ञ में भाग लिया। पद्मश्री आर्यरतन डॉ0 पूनम सूरी जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया। तदुपरान्त टंकारा के ही पूर्व स्नातक श्री अंकित उपाध्याय के भजन एवं आचार्य विश्णमित्र वेदार्थी के प्रवचन प्रस्तुत किए गए।

तदुपरान्त माननीय आर्यरत्न डॉ0 पूनम सूरी जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया । इस अवसर पर श्री अंकित उपाध्याय एंव आर्य वीर दल द्वारा ध्वजगीत गाया गया । तदुपरान्त आर्यरत्न डॉ0 पूनम सूरी जी ने षोभायात्रा को ओउम् ध्वज दिखाकर षोभायात्रा का षुभारम्भ कराष्या जोकि टंकारा गॉव की गलियों में होते हुए पनः टंकारा परिसर में पहुंची ।

दिनांक 18-02-2023 को दोपहर 2 बजे से ऋशि स्मृति समारोह का आयोजन कार्यकारी प्रधान श्री योगेष मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। आर्यरत्न डॉ0 पूनम सूरी जी ने टंकारा में ली गई 15 एकड़ भूमि में स्मृति स्थल पर किए जाने वाले निर्माण कार्य की विस्तृत जानकारी दी, जिससे पधारे हुए सभी आर्य जन उत्साहित हुए ।

वेद प्रचार परिषद द्वारा बहुकुण्डीय यज्ञ सोल्लास संपन्न

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

गाजियाबाद। वेद प्रचार परिषद के तत्वावधान में सोमवार को बहुकुण्डीय यज्ञ संकल्प वाटिका पार्क, सैक्टर-15, वसुन्धरा में मास्टर निरंजन कुमार की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुआ। आर्य जगत की सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका शकुन्तला आर्या एवं देश भूषण चावला ने भजनों द्वारा ऋषि महिमा एवं ईश भक्ति का गुणगान किया, जिसे सुनकर श्रोता झूम उठे।

महायज्ञ के ब्रह्मा एवं मुख्य वक्ता डा जयेन्द्र आचार्य (कुलपति, आर्ष गुरुकुल नोएडा) ने बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न किया।

इस अवसर पर यज्ञ महिमा एवं वेद महिमा का गुणगान करते हुए उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि हमने इतिहास में विभिन्न युद्ध पढ़े हैं, लेकिन स्वामी दयानंद ने पहली बार अज्ञान के खिलाफ

अंतहीन युद्ध शुरू किया था, उन्होंने कहा इंसान का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञान है, अविद्या है, इसलिए अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। स्वामी दयानंद चाहते थे दुनियां में वेद का पठन-पाठन हो, शास्त्र के बिना तर्क खोखला होता है, सत्य की कोई मेरिट नहीं होती। इसलिए आपने सूर्य बनना है, तभी अंधेरा मिटेगा।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वेद प्रकाश आर्य, प्रधान आर्य समाज वसुन्धरा ने कहा कि हमने जीवन में एक बात सीखी है जो अच्छी बात सुनते हैं उसे अपनाएं, करनी कथनी में अंतर न रखें, परमात्मा में विश्वास रखें, महर्षि दयानंद के कार्यों को याद रखें,उस पर चलने का प्रयास करें।

समारोह के अध्यक्ष अध्यक्ष मास्टर निरंजन कुमार (आर्य समाज टीला) ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने राष्ट्र एवं समाज की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति प्रदान कर दी और उनके द्वारा लिखित ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की प्रेरणा से कितने ही क्रांतिकारियों ने राष्ट्र की आजादी प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

इस दौरान आशा चौहान, प्रवीन चौधरी, रश्मि चौहान, संतोष वैश्य, प्रीति चौहान, पूजा चावला, प्रज्ञा चौहान, संगीता आर्या, सुधा राणा एवं यज्ञवीर चौहान, त्रिलोक शास्त्री, देववृत्त चौहान आदि मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाया आर्य समाज का स्थापना दिवस व नवसंवत्सर पर्व

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

चण्डीगढ (वंदना शास्त्री)। डीएवी मॉडल स्कूल सैक्टर-15-ए, चण्डीगढ़ में भारतीय नववर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा), विक्रमी संवत-2080 व 149वॉ आर्य समाज स्थापना एवं नवसत्र-2023-24 के शुभागमन तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती के शुभारंभ पर देवयज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्या अनुजा शर्मा मुख्य यज्ञमान बनी तथा आचार्य रमेश शास्त्री-धमार्चार्य ने यज्ञ का विधिवत संचालन किया। समारोह में महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में वर्णित 33 प्रकार की देवताओं की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि 8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य, एक इन्द्र और एक प्रजापति अर्थात जिसे यज्ञ भी कहा गया है। यज्ञोपरांत

संगीत विभाग की अध्यापिकाओं ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर ऋषि महिमा पर एक भजन सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर प्राचार्या अनुजा शर्मा ने सभी याज्ञिकों को भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ भेंट की तथा यह आह्वान किया कि आने वाले समय में महर्षि दयानन्द के द्वि-शताब्दी वर्ष को विभिन्न गतिविधियों के साथ निरंतर अबाधगति से महर्षि दयानन्द के विचारधारा को जन जन में प्रसारितकरने का पूरा प्रयास करें।

शहीदों का बलिदान सदैव मार्ग करता रहेगा प्रशस्त: अनिल आर्य

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

गाजियाबाद। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 23 मार्च को अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के बलिदान दिवस पर आनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस मौके पर परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि अमर शहीदों का बलिदान सदियों तक समाज का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर हजारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। यह आजादी क्रांतिकारियों के बलिदान से ही मिली है इसकी रक्षा व अखण्डता का सबको संकल्प लेना होगा।

इस अवसर पर राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने अमर शहीदों को शत शत नमन कर श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में गायिका पिंकी आर्य, प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता व सुदेश आर्य आदि सहित अनेक जन उपस्थित थे।

दिल्ली में 29 अप्रैल से होगा दो दिवसीय वेद विज्ञान सम्मेलन

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

दिल्ली। विश्व वेद परिषद् और परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार और रविवार, दिनांक 29-30 अप्रैल 2023 को दिल्ली में अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

सम्मेलन में उच्च कोटि के वैदिक विद्वान, वैज्ञानिक, प्रमुख राजनेता व शिक्षा शास्त्री पधार रहे हैं। सम्मेलन का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में वेदों की महत्ता को स्थापित करना, वेद संबंधित भ्रांतियों का निराकरण तथा विश्व की

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला करेंगे उद्घाटन

आधुनिक समस्याओं जैसे गरीबी, अशिक्षा, आर्थिक असमानता, पर्यावरण असंतुलन , जल संरक्षण व विषयुक्त खेती आदि का समाधान वेदों के संदर्भ में ढूंढना है। साथ ही, ऋषियों के दार्शनिक चिंतन व वेद भाष्य की वैज्ञानिक शैली को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना है। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों के प्राध्यापक व शोध छात्र भी बड़ी संख्या में अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

वैदिक विद्वानों का यह संगम अवश्य ही वेदों के कई अनसुलझे प्रश्नों, वेदों के महत्व व वर्तमान युग में उनकी प्रासंगिकता को सही रूप में समझाने में उपयोगी सिद्ध होगा तथा वेद प्रचार का एक सुंदर माध्यम बनेगा। । आयोजन समिति के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती, परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश के अनुसार शोधपत्र भेजने की अंतिम तिथि 20 अप्रैल 2023 है।

शहीद दिवस पर क्रांतिकारियों को किया नमन

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

गोंडा। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गोंडा के तत्वावधान में सरदार भगत सिंह के बलिदान दिवस पर उन्हें याद करते हुए शास्त्री विनोद आर्य ने बताया कि उन्होंने महर्षि का अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाते हुए हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूमा था इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि 22 मार्च 2023 को 149वीं आर्य समाज स्थापना दिवस एवं आर एस एस प्रमुख डॉ. हेडगेवार, संत झूलेलाल, मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्य अभिषेक, युधिष्ठिर महाराज राज्याभिषेक हुआ था। उल्लेखनीय है कि 1,96,0853124 वर्ष पूर्व मानव उत्पत्ति होने के नाते इसे सृष्टि संवत कहा जाता हैं और महाराजा विक्रमादित्य ने 2080 वर्ष पूर्व विक्रम संवत चलाया था इस

ऐतिहासिक दिन की शुभकामनायें दी। इस अवसर पर नेचरोपैथी कैंप के डॉ0 बृजेंद्र आर्य, डॉ0 कर्मवीर आर्य हरियाणा, डॉ0 प्रवीन मौर्य का प्रतीक चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर प्रधान शास्त्री विनोद आर्य के नेतृत्व में नगर के प्रमुख मार्ग होते हुए प्रभात फेरी निकालकर देव यज्ञ के माध्यम से नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस की शुभकामनाये दी। इस दौरान समाजसेवी धर्मवीर आर्य, प्रदीप आर्य, माधव राज सिंह, अनीता राजपाल, मोहिनी, यज्ञसैनी, डिप्टी ओझा सीआईबी, डॉ० बीबी मिश्रा, अमर दीक्षित व विवेक आर्य आदि मौजूद रहे।

।। इदं राष्ट्राय इदन्न मम ।।

परम पूज्य योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज का

विद्यार्थियों, अभिभावकों व शिक्षकों के नाम पत्र

आत्मीय विद्यार्थीगण एवं अभिभावकगण,

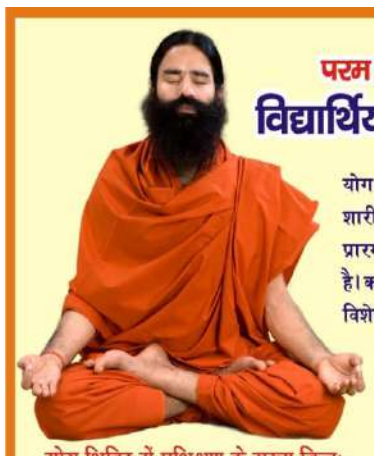

योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, आज दुनिया के 200 देशों में योग के शारीरिक , मानसिक स्वस्थ्य बनाने के वैज्ञानिक महत्व को स्वीकार करके योग करना प्रारम्भ कर दिया है, योग भारत द्वारा पूरी दुनिया को दी गई एक अनुपम वैज्ञानिक देन है। कासगंज के नागरिक घरपरिवार को स्वस्थ्य समृद्ध संस्कारवान बनाने के लिए तथा विशेष रूप से भारत की नई पीढी जिसके ऊपर भारत के नव निर्माण का दायित्व है उनको योग सिखाने के लिए मैं स्वयं कासगंज में आ रहा हूँ। योग शिविर में विद्यार्थियों को शारीरिक मानसिक स्वरूप बनाने के लिए तथा भारत की नई पीढी के चरित्र निर्माण के लिए दिनांक 8 अप्रैल 2023 को सायं 5:00 बजे से 7:30 बजे तक एक विशेष योग सत्र विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया जा रहा है।

योग शिविर में प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दुः-

* विद्यार्थी व अभिभावकों को सामान्य योगाभ्यास के द्वारा योग आसन प्राणायाम द्वारा अनेक रोगों से दूर रहकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करनासिखाया जाएगा।
* शिविर में विद्यार्थियों को लंबाई बढाने और अच्छी दृष्टि बढाने के योग प्राणायाम सिखाये जाएंगे। बच्चों में मोबाइल के कारण आंखों की समस्या तथा गर्दन दर्द व माईग्रेन से मुक्ति का रास्ता सिखाया जायेगा।
* विद्यार्थियों को परीक्षा में सफलता हेतु शिविर में बच्चों को शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास हेतु योग, आसन, प्राणायाम, मुद्रा व अन्य क्रियायें सिखाई जाएंगी।
* बच्चों को मातृ–पितृ भक्त, माता–पिता व बडों का सम्मान करने हेतु चरित्रवान, राष्ट्रभक्त, जिम्मेदार बनाने के लिए शिक्षित किया जाएगा।
* बच्चों को संघर्ष शील व अखंड प्रचंड पुरूषार्थ की प्रेरणा दी जाएगी, जिससे वे जीवद संघर्ष में विजयी हों तथा डिप्रेशन, उदासी, एंग्जायटी से बचने का मार्ग दिखाया जाएगा। मोबाइल की लत , अश्लीलता आदि के दुष्प्रभावों से बच्चों को बचने का मार्ग दिखाया जाएगा।
* शिविर में एडवांस आसनों,मल्लखम्ब व पतंजलि गुरूकुलम् के छोटे बच्चों द्वारा वेद,दर्शन, गीता आदि के श्लोक/मंत्रों का प्रदर्शन किया जाएगा।

आज कोरोना की महामारी में विद्यालय बंद होने से विद्यार्थियों पर मानसिक दबाव बढ गया है। अभी थोडे दिन पहले ही एक दुखद घटना में राजस्थान की एक दशवीं कक्षा की बालिका खुशबू ने माता पिता के नाम पत्र लिखकर " कि दशवीं कक्षा का दबाव मेरे ऊपर अत्यधिक है तथा मैं परीक्षा में 95: अंक नहीं ला सकती" लिखकर एक होनहार बालिका ने परीक्षा के दबाव के कारण आत्महत्या कर ली।

कोरोना की महामारी में शारीरिक – गतिविधियाँ कम होने से बच्चों में, ऑनलाइन कक्षा आदि के कारण मोबाइल का अत्यधिक प्रयोग बढने से आँखों से लेकर, पूरे शरीर पर मोटापे व अन्य बीमारियों का खतरा बढ गया है। आज मोबाइल के दुरूपयोग के कारण बच्चों की एकाग्रता नष्ट हो गई है। बच्चो में अनावश्यक प्रतिस्पर्धा के कारण अत्यधिक तनाव बढ रहा है, इसके साथ–साथ समृति/ मैमोरी कम हो रही है, बच्चों में बार–बार भूलने की बीमारी पैदा हो रही है। शहरीकरण व एकल परिवार होने से तथा कोरोना के अकेलेपन के कारण बच्चों में संस्कारों की कमी हो रही है जिसके कारण बच्चे बड़ों का सम्मान नहीं कर रहे तथा आज्ञा का पालन नहीं करते।

लॉन्ग कोविड–19 के दुष्प्रभावों के कारण बच्चों में एंजायटी, डिप्रेशन के साथ–साथ दमा, अस्थमा, एलर्जी, वजन कम होना या वजन बढना, अनिद्रा आदि दुष्प्रभाव बढ रहे हैं। महामारी के डर से घर से बाहर न निकलने के कारण शारीरिक निष्क्रियता से बच्चों में मोटापा, कोलेस्ट्रोल बढ रहा है। इन सब समस्याओं को देखते हुए एक विशेष योग सत्र दिनांक 8 अप्रैल 2023 को 5:00 से 7:30 बजे तक बारह पत्थर मैदान में विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया जा रहा है। सभी अभिभावकों हमारा विनम्र निवेदन है कि अपने बच्चों को संस्कारवान, चरित्रवान, स्वस्थ्य, सबल, योगी–निरोगी , मस्तिष्क से मेधावी, प्रज्ञावान बनाने के लिए, आप अपने बच्चों को योग शिविर में अवश्य लाएं।

मेरा पहली बार कासगंज आगमन हो रहा है, सभी अभिभावकों से अनुरोध है कि वह अनिवार्य रूप से अपने बच्चों को लेकर उनको शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ, संस्कारवान, चरित्रवान व जिम्मेदार बनाने के लिए इस योग शिविर में अवश्य भाग लेवें।

आपका,

निवेदन–अभिभावक अनिवार्य रूप से अपने बच्चों को इस योग शिविर में लेकर आयें तथा योग शिविर में भाग लेते हुए विद्यार्थी की फोटो उनके विद्यालस के कक्षा के ग्रुप में अपलोड करा दें जिससे कि योग शिविर में विद्यार्थी की उपस्थिति सुनिश्चित हो सके। –आज्ञा से प्रधानाचार्य

आयोजक : समस्त पतंजलि योगपीठ, परिवार कासगंज, उत्तर–प्रदेश। सम्पर्क सूत्र : 941258997, 9897146377, 9012889999, 9837778120

श्री गौशाला का वार्षिकोत्सव संपन्न

वेदानुकूल आचरण से मनुष्य बनता है महान : आचार्य मलिक

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

सरधना (मेरठ)। श्री गौशाला कपसाढ़ का 120 वां तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव चतुर्वेद शतकम् यज्ञ के साथ समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य देवपाल रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता एवं संचालक आचार्य डॉ0 कपिल मलिक ने कहा, कि वेद परमात्मा प्रदत्त है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है। मनुष्य जीवन मे महान बनना चाहता है तो वेदानुकूल आचरण से ही सम्भव हो सकता है। क्योंकि छोटे से तिनके से लेकर ईश्वर तक का ज्ञान विज्ञान वेद में निहित है। उन्होंने बताया कि मुख्य दो विषय वेद में है– एक कर्त्तव्य और दूसरा अकर्त्तव्य। जब मनुष्य को ये बोध हो जाता है कि क्या करना चाहिए और क्या नही करना चाहिए, इस के बोध के साथ ही जब हम इसे व्यावहारिक धरातल पर उतार लेते हैं, तो जीवन में आनन्द आ जाता है। कार्यक्रम में भजनोपदेशक के रूप में वेदपाल आर्य एवं कृष्णदत्त नादान ने ईश्वर भक्ति और राष्ट्र भक्ति के गीत प्रस्तुत किये। इस अवसर पर स्वामी विश्वानन्द ने कहा कि आर्य समाज ही एक ऐसा संगठन है जो अंधविश्वास और पाखंड को दूर करने का लगातार प्रयास कर रहा है। इस अवसर पर कन्या गुरुकुल झिटकरी–भाभोंरी की आचार्या आदेश शास्त्री, विजय मुनि, माखन लाल आर्य, जयवीर सिंह व राजकुमार आदि ने भी विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता मास्टर रामौतार कुशावली टेली ने की। कार्यक्रम में भंवर सिंह आर्य, यशपाल आर्य, भगवत सिंह आर्य, रविन्द्र आर्य सकौती, रेशपाल पूर्व प्रधानाचार्य, अंकित, बसन्त, गजेंद्र, मदनपाल आर्य, वन्दना आर्या, गरिमा आर्या, सपना आर्या व डॉ0 सदन आर्य आदि सहित अनेक सज्जन मौजूद रहे।

परमात्मा के अनेक नाम है

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः।
रश्मीभिर्न आभृतं, महेन्द्र एत्यावृतः।।
(अथर्व १३,४,४)

शब्दार्थ : (सः अर्यमा सःवरुणःसःरुद्रःसःमहादेवः)

वह आदित्य और परमात्मा अर्यमा, वरुण, वह रुद्र महादेव है उसकी (रश्मिभिःनभः आभृतं आवृतःमहेन्द्रः एति) रश्मियों से आकाश भर गया है, रश्मियों से महेन्द्र आ रहा है।

व्याख्या : देखो, गगन में

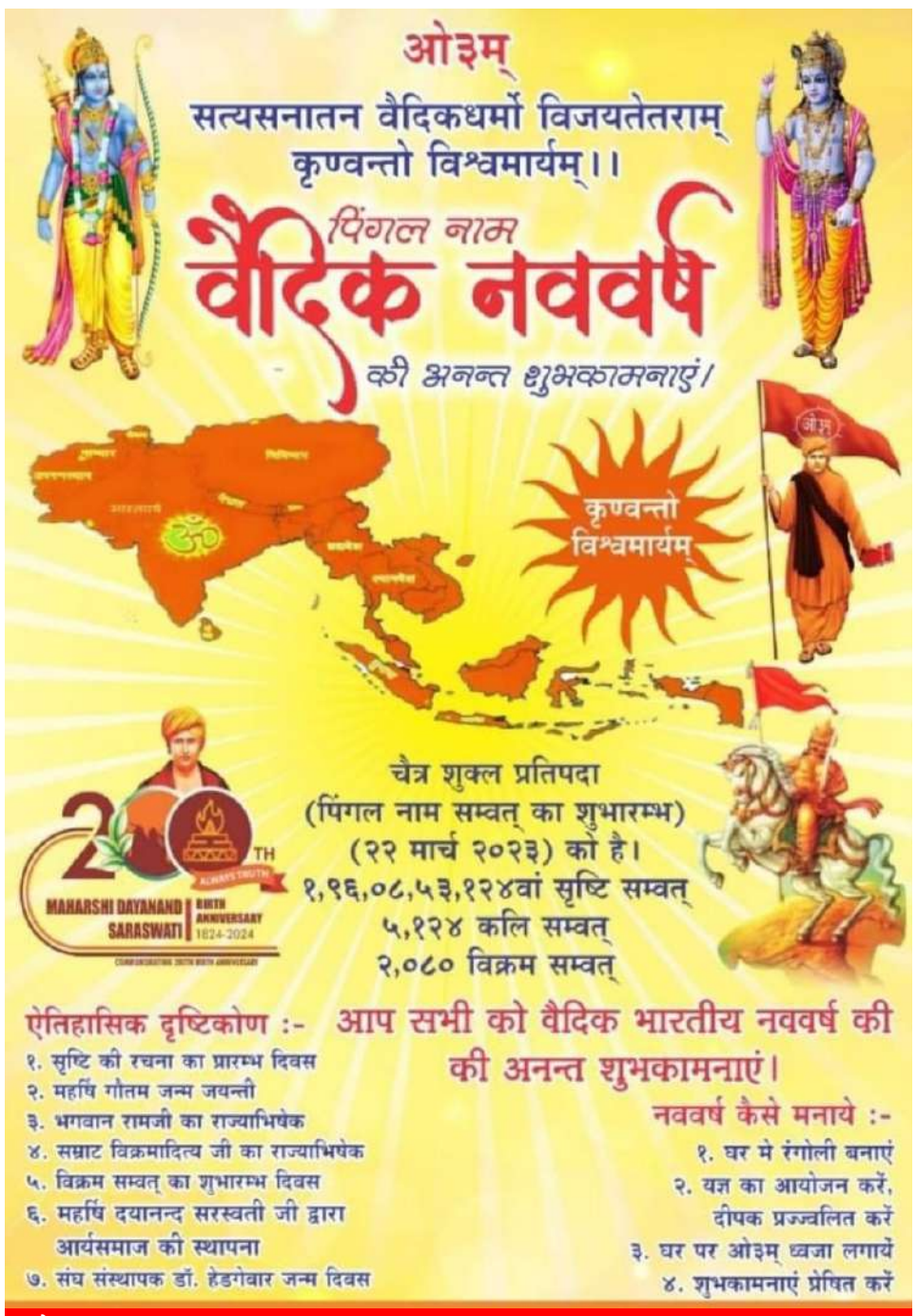

विलक्षण तेजःपुञ्ज से आवृत महेन्द्र उदित हो रहा है। उसकी रश्मियों से आकाश भर गया है। प्राची में अपूर्व लालिमा के साथ उदित होने वाला शनैः शनैः उपर चडकर मध्याकाश में पहुँच प्रचण्डता के साथ दैदीप्त होने वाला और फिर क्रमशः प्रतीची के अंक में पहुँच कर पुनः लोहित हो उठने वाला यह आदित्य मण्डल ही महेन्द्र नाम से स्मरण किया जाता है, क्योंकि

वह महान इन्द्र है। इस सूर्य के अन्य अनेक नाम है। यह अर्यमा कहलाता है, क्योंकि अंधकार, मालिन्य, रोग कृमि आदि अरियो का नियमन करता है। इसका नाम वरुण भी है, क्योंकि यह प्रकाश- प्रदानार्थ तथा धारणार्थ ग्रहोपग्रहो का वरण करता है। इसे रुद्र भी कहते हैं। क्योंकि यह रोग आदियो को रुलाता है, वह महादेव नाम से स्मरण किया जाता है। आओ ज्योति एवं प्राणों के स्त्रोत इस आदित्य रूप महैन्द्र से हम निरन्तर ज्योति एवं प्राण प्राप्त करते रहे। और देखो, यह विशाल तेज राशि से आवृत अति परमैश्वरयशाली परमात्मा रुप दूसरा महेन्द्र हमारे अन्तःकरण में उदित हुआ है, जिसकी रश्मियों से हृदयान्तरिक्ष आलोकित हो उठा है। यह महेन्द्र यद्यपि ब्रह्माण्ड में एक ही है, तो भी इसके नाम अनेक है। जो इसके विभिन्न गुण कर्मो को सूचित करते हैं। यह श्रेष्ठ लोगों को जानने और यथायोग्य मान करने वाला होने से (अर्यमा) कहलाता है। शिष्ट और मुमुक्षु जनों के द्वारा वरा जाने के कारण (वरूण) संज्ञा को पाता है। सत्योपदेशो का प्रदान करने अन्यायी जनों को रुलाने के कारण (रूद्र) नाम से व्यपदिष्ट है। जो प्रकृति में सूर्य, चन्द्र माता पिता राजा आदि प्रसिद्ध देव है उन सब की अपेक्षा महान देव होने के कारण (महादेव) नाम से स्मरण किया जाता है। इस प्रकार परमात्मा के अनेक नाम है। मन्त्र का भाव है कि- आओ हमसब उस महा सम्राट महामहिम महेन्द्र की दिव्य रश्मियों के आलौकिक प्रकाश से हम स्वयं को पवित्र और परितृप्त करें।

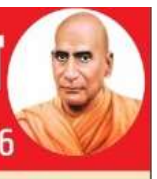

नए वर्ष में लें, शुभ कर्म करने का संकल्प : संजीव रूप

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

बिल्सी (बदायूं)। यज्ञ तीर्थ गुधनी में स्थित आर्य समाज मंदिर में नए वर्ष के आगमन पर हर्षोल्लास के साथ यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें पधारे श्रद्धालुओं को आचार्य संजीव रूप ने ओम ध्वज, सामग्री और कैलेंडर भेंट किए। ग्राम प्रधान सूर्य प्रताप सिंह यजमान बने तथा अनेक ग्रामवासी आहुतियां देने को पधारे। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य संजीव रूप ने कहा कि हमारा भारतीय नववर्ष ही वैज्ञानिक और प्राकृतिक नववर्ष है। इसी दिन ही महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। महाराजा विक्रमादित्य का राज्याभिषेक आज के दिन हुआ, तभी से विक्रम संवत का शुभारंभ हुआ, जो 2080 वां आज से शुरू हुआ है तथा इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ हेडगेवार का जन्मदिन है। इस अवसर पर अनिल उपाध्याय ने कहा कि यह पहली बार हुआ है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में 9 दिन तक उत्सव मनाने का प्रबंध किया है, हम सब सरकार का धन्यवाद करते हैं।

आर्य समाज के नव संवत्सर कार्ड का हुआ विमोचन

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

कोटा। आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर जिला कलेक्टर कोटा द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर कार्ड का विमोचन किया गया। इस बारे में आर्य समाज के प्रचार प्रभारी अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में सोमवार को एक प्रतिनिधिमंडल ने जिला कलेक्टर ओपी बुनकर से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर जिला कलेक्टर महोदय ने आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग द्वारा तैयार किए गए भारतीय नव संवत्सर व आर्य समाज स्थापना दिवस के मल्टी कलर कार्ड का विमोचन किया। प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने महर्षि दयानंद सरस्वती कृत अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भी जिला कलेक्टर को भेंट किया।

नव संवत्सर व स्थापना दिवस कार्ड के विमोचन का दृश्य केसरी।

गुरु विरजानंद सांगोयांग गुरुकुलम का शुभारंभ

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

बरेली। महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा सन 1881 में स्थापित आर्य समाज अनाथालय, 68 सिविल लाइन, बरेली की असाधारण सभा बैठक 19 मार्च 2023 के अंतर्गत लिए गए निर्णय के अनुसार युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती के मंतव्य के अनुकूल चारों वेदों का सस्वर सहित अंग उपांग एवं आधुनिक विषयों का अध्ययन छात्र-छात्राओं को कराया जाएगा। इसके दायित्व हेतु प्रधान आर्य समाज अनाथालय के आचार्य ओंकार आर्य को बैठक के माध्यम से अधिकृत किया गया।

कमेटी के प्रमुख मंत्री अशोक कुमार प्रधान, उप प्रधान विनय कुमार सक्सेना, तेज कुमार आर्य, गया प्रसाद आर्य आदि शिक्षण कमेटी के मुख्य संरक्षक होंगे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की उपमंत्री तृप्ति आर्या ने संगठन के पदाधिकारियों द्वारा लिए गए निर्णय की सराहना करते हुए बताया कि महर्षि के आंदोलन मे यह शिक्षण संस्थान अग्रणी भूमिका निभाएगा।

आर्य वीर दल मध्य उत्तर प्रदेश मंत्री शास्त्री विनोद आर्य ने शुभकामना देते हुए बताया कि वेदों की ओर लौटने का जो संकल्प के साथ शिक्षण कार्य होगा, निश्चित ही आने वाले नए युग का मार्ग प्रशस्त करेगा। आचार्य ओमकार आर्य ने इस नए दायित्व के लिए कमेटी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि निश्चित ही आर्य जगत में आर्य समाज अनाथालय बरेली द्वारा संचालित गुरु विरजानंद सांगोयांग गुरुकुलम् महर्षि के मंतव्यो का समाज बनाने के लिए गौरव हासिल करेगा। नए सत्र का शुभारंभ 1 अप्रैल 2023 से पंजीयन प्रारंभ कर किया जाएगा, जिसमें देश व प्रदेश के वेदपाठी अपना-अपनों का रजिस्ट्रेशन कराकर ऋषि मिशन में अद्वितीय योगदान कर सकेंगे। संस्थान को दान देने वालों को धारा 80 के अंतर्गत छूट का भी प्रविधान

महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा सन 1883 में बरेली में स्थापित आर्य समाज अनाथालय केसरी।

महर्षि दयानंद के नाम पर हो मुरादाबाद के विश्वविद्यालय का नाम

आर्य समाज स्थापना दिवस पर निकाली प्रभातफेरी

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

मंडी धनौरा (अमरोहा)। मुरादाबाद में प्रस्तावित विश्वविद्यालय स्थापना की प्रदेश सरकार की घोषणा पर आर्य समाज द्वारा मांग की गई है कि प्रस्तावित विश्वविद्यालय का नाम युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद के नाम पर रखा जाए, क्योंकि आर्य समाज के अमर ग्रंथ और महर्षि दयानंद द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश की रचना का श्रीगणेश मुरादाबाद से ही किया गया है तथा इस वर्ष विश्व भर में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वी जयंती मनाई जा रही है। बुधवार को नव वर्ष नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में क्षेत्र के आर्यजनों ने नगर स्थित आर्य समाज मंदिर में यज्ञ किया एवं बैठक का आयोजन कर प्रदेश के मुख्यमंत्री से मांग की है कि मुरादाबाद में प्रस्तावित विश्वविद्यालय का नाम युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद के नाम पर रखा जाए। मुख्य वक्ता डॉ0 यतींद्र कटारिया ने कहा कि महर्षि दयानंद स्वराज के उद्घोषक तथा हिंदी के प्रबल समर्थक थे जिन्होंने हिंदी को सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा का दर्जा देते हुए अपने सारे ग्रंथ हिंदी भाषा में ही लिखे और अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के लेखन का कार्य मुरादाबाद नगर से ही प्रारंभ किया था।

आर्य जगत की अपूरणीय क्षति

सुनील मानकटाला नहीं रहे

आर्य समाज की एक महान विभूति, उदारमना, समर्पित समाजसेवी, निष्काम कर्मयोगी, विनम्र दानदाता, सहजता व सरलता की प्रतिमूर्ति, मुंबई निवासी श्री सुनील मानकटाला जी 8 मार्च 2023 को इस संसार सागर से विदा होकर परमपिता परमात्मा की शरणागत हो गए। अल्प आयु में ही उनका इस प्रकार असमय हम सबके बीच से विदा हो जाना, निश्चय ही समस्त परिजनों व सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। श्रद्धेय श्री सुनील मानकटाला जी आर्य समाज के प्रति पूर्ण निष्ठा व दानशीलता से आजीवन समर्पित रहे। आर्य समाज, गांधीधाम, महर्षि दयानंद जन्म स्थली, टंकारा (गुजरात) तथा आर्य समाज की अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से निष्काम भाव से जुड़े रहे यशस्वी व्यक्तित्व श्री सुनील मानकटाला जी का आकस्मिक वियोग निश्चय ही, हम सबको विचलित कर देने वाला है। वे आर्य जगत की महान विभूति यशस्वी पिता स्वर्गीय बाबू ओंकारनाथ मानकटाला जी के पुत्र थे। वे समाजसेवा के कई आयामों से जुड़े हुए थे और कर्मठ आर्यसमाजी थे। अभी हाल ही में आर्य समाज गांधीधाम जीवन प्रभात परिसर में आयोजित श्री गिरीश खोसला जी (कुलपिता) के हीरक जयंती महोत्सव के अवसर पर दि. 5, 6 वा 7 जनवरी 2023 को वे गांधीधाम पधारे थे। उन्होंने वहां आयोजित यज्ञ, शोभायात्रा तथा विभिन्न सम्मेलनों में बढ़ चढ़कर भाग लिया। उसके पश्चात ऋषि जन्मभूमि टंकारा में दि.17 व 18 फरवरी को आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में भी उनकी सपरिवार उपस्थिति समारोह को गरिमा प्रदान करने वाली थी। उस समय भला कौन जानता था, कि यह दिव्य आत्मा बहुत ही जल्दी हम सब से विदा लेने वाली है। निःसंदेह, किसी भी कार्यक्रम में आपकी गरिमामय जीवंत उपस्थिति, समारोह को मंडित करने वाली होती थी। आपका सहज़सरल व्यक्तित्व, आपकी मृदुभाषिता व विनम्रता आपके व्यक्तित्व को बहुत ही उच्च कोटि का बनाने वाली थी। आप सादा जीवन उच्च विचार के साक्षात प्रतिमान थे। आज श्रद्धेय मानकटाला जी हमारे मध्य नहीं हैं, लेकिन उनकी भावभीनी मधुर स्मृतियां सदैव हमारा पथ प्रशस्त करती रहेंगी। हम परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हैं तथा शोक संतप्त परिजनों को इस असीम दारुण दुःख की घड़ी में धैर्य शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

ओ३म शांतिः शांतिः शांतिः।
आर्य वाचोनिधि आचार्य प्रधान आर्य समाज जीवन प्रभात, गांधीधाम (गुजरात)

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूचीः

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ...प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ...प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी ..प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार ..प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।

संपर्क सूत्र : 94121 39333 , 87552 68578

यज्ञ करके मनाया आर्य समाज स्थापना व नवसंवत्सर पर्व

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

अमरोहा/ पं. देवेश शर्मा। आर्य समाज प्रांगण में अपर

जिलाधिकारी न्यायिक माया शंकर ने कहा कि समाज से कुरीतियों के उन्मूलन में आर्य समाज का बड़ा योगदान है। आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करके राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत किया जा सकता है।

दरअसल, बुधवार की सायंकाल नवसंवत्सर और आर्य समाज के स्थापना दिवस पर आर्य समाज अमरोहा के तत्वावधान में आर्य समाज के विरजानंद सभागार में आयोजित गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि एडीएम ने कहा कि महर्षि दयानंद रचित सत्यार्थ प्रकाश मात्र एक ग्रंथ नहीं है। अपितु सामाजिक विसंगतियों और कुरीतियों को दूर करने का समाधान प्रस्तुत करने वाला एक मार्गदर्शक है।

विशिष्ट अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक वीपी सिंह ने कहा कि आर्य समाज ने समाज से जातपात और छूआछूत को खत्म करने के लिए बड़ा कार्य किया है। केए महाविद्यालय कासगंज के प्राचार्य डॉ0 अशोक आर्य ने कालगणना को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का हर क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अल्लीपुर के प्रधानाचार्य देवेंद्र प्रताप ने कहा कि आर्य समाज से बच्चों और युवा पीढ़ी को जोड़ने की जरूरत है। आर्य समाज के प्रधान अभय आर्य ने महर्षि दयानंद के योगदान पर प्रकाश डालते हुए सभी से अमरोहा आर्य समाज में होने वाले नियमित और साप्ताहिक यज्ञ में अपनी सुविधानुसार शामिल होने का आह्वान किया। इसके साथ ही कहा कि वैदिक नववर्ष हमारे प्राचीन गौरव का प्रतीक है।

वहीं जेएस हिंदू पीजी कॉलेज अमरोहा की हिंदी विभाग की अध्यक्ष व प्रोफेसर डॉ0 बीना आर्य के प्रोफेसर बनने पर मुख्य अतिथि ने सम्मानित किया। इस मौके पर ऊषा आर्य, डॉ0 बीना आर्य, विनय त्यागी, अनिल जग्गा, मधु खुराना, डॉ0 दीपक अग्रवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम संयोजक डॉ0 जीपी सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। संचालन अभय आर्य ने किया। पुरोहित सोमेश शास्त्री ने शांतिपाठ कराया। इस दौरान मंत्री नत्थू सिंह आर्य, हेतराम सागर, मनोहर लाल खुराना, सुरेश विरमानी, ओमपाल सिंह, कोषाध्यक्ष अंकुर अग्रवाल, एनके गर्ग, हरिओम अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, राहुल मोहन माहेश्वरी, यशवंत सिंह, रोहित गोयल, राजीव यादव, डॉ0 जगत सिंह, डॉ0 अनुपम गर्ग, अश्वनी खुराना, संजीव रस्तोगी, शिवम रस्तोगी, निर्मल विरमानी, अंजू आर्य, निशा रस्तोगी आदि मौजूद रहे।

सनातन नववर्ष पर निकाली भव्य जन जागरण यात्रा

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

शोभायात्रा में उपस्थित श्रद्धालु आयोजन केसरी।

मेरठ। वैदिक स्वर्ग आश्रम गुरुकुल सिसौली गढ़ रोड मेरठ में बुधवार को सनातन वैदिक नव वर्ष के उपलक्ष में आश्रम सञ्चालक आचार्य देवदत्त के द्वारा बृहद देवयज्ञ एवं जन जागरण यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य डॉ0 कपिल मलिक संचालक आर्य वीर दल मेरठ, विशिष्ट अतिथि आचार्य भीष्म वरिष्ठ शिक्षक आर्य वीर दल रहे। अपने उद्बोधन में आचार्य डॉ0 कपिल मलिक ने नववर्ष के विषय में बताया कि नव वर्ष चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता है। यह हमारा सृष्टि के आदि से चलता आ रहा है। इस नववर्ष को 1 अरब 96 करोड 08 लाख 53 हजार 124वां वर्ष प्रारंभ हो चुका है। विक्रम संवत 2080 आज से आरम्भ हो रहा है। इस आयोजन में स्वामी शंकरवेश, शुभम शास्त्री, मदनपाल आर्य एवं गांव के अन्य महानुभाव मौजूद रहे।

होली मिलन समारोह में उड़े रंग-गुलाल

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

अमरोहा। स्त्री आर्य समाज ने आर्य समाज प्रांगण में सोमवार की देर शाम होली मिलन समारोह बड़े ही धूमधाम से मनाया। स्त्री आर्य समाज की सभी सखियों ने होली की मस्ती का आनंद लिया। इस अवसर पर वैदिक विधि विधान से संपन्न यज्ञ के साथ सदस्यों ने होली के रंग बिरंगे परिधान पहनकर और रंग लगाकर होली का त्योहार मनाया। स्त्री आर्य समाज की अध्यक्षा निर्मल विरमानी ने सभी का स्वागत रंग लगाकर किया और नव संवत्सर की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर अंशु अग्रवाल, सुमन अरोड़ा, नीतू रस्तौगी अनु अरोड़ा, शालिनी गुप्ता, सुप्रिया खुराना द्वारा होली के गीत प्रस्तुत किए। मंत्राणी डॉ0 बीना शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि होली बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है। इस पर्व को आपसी प्यार और सौहार्द के साथ मनाना चाहिए। इस दौरान अंजू आर्य, अंजू अग्रवाल, नीरू अरोड़ा, शशि खंडेलवाल, अंशु अग्रवाल, नीतू रस्तोगी, अचला टंडन, शालिनी गुप्ता, विद्यावती विरमानी, जीत कौर, उपमा गोयल, अंजली अग्रवाल, नीरू लोचन, गीता गोयल, ऊषा अरोड़ा, सोनिका रस्तौगी, ऊषा आर्य आदि सदस्याएं उपस्थित रही।

नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

रावतभाटा (कोटा)। आर्य समाज रावतभाटा में सृष्टि नव संवत्सर के अवसर पर प्रातःकाल यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नव संवत्सर के स्वागत में वेद मंत्रों से विशेष आहुतियां प्रदान की गईं। कोटा से पधारे वेद प्रिय शास्त्री ने बताया कि आज से सृष्टि संवत एक अरब छियानबे करोड़ आठ लाख तिरपन हजार एक सौ चौबीस वर्ष प्रारंभ हो गया। सायंकाल आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें विशेष सामाजिक सेवा में योगदान के लिए मंजुल मयंक, अवकाश प्राप्त शिक्षिका हेमंत गर्ग, ओपी गर्ग, शिक्षक दीपक कुमार का स्वागत प्रधान विनोदकुमार त्यागी ने श्रीफल, माल्यार्पण, चंदन टीका और शाल ओढ़ाकर वेदमंत्रों के साथ अभिनंदन किया।

इस अवसर पर काव्य संध्या का आयोजन किया गया। मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि आर्य समाज ने शिक्षा, समाज सुधार, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, नारी उत्थान, वेदों की ओर लौटने, गुरुकुलों की स्थापना, डीएवी स्कूल, हैदराबाद सत्याग्रह जैसे बहु आयामी उल्लेखनीय कार्य किए हैं और वर्तमान में भी कर रहा है। इस अवसर पर आकाश ने ' वह देव दयानन्द मेरा" , जीपी शर्मा ने "ओम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली", अरुण कुमार भट्ट ने " ओंकार हुंकार भर देता ", एन. पंडित ने " ओम का नाम तुम जपते रहो ", कवयित्री ममता कश्यप ने " स्वामी दयानन्द सरस्वती के ज्ञान की ज्योति से अंधकार धरा का मिटाएंगे ", रमाकांत शर्मा ने " विपरीत परिस्थितियों में जिसने लोगों को धर्म मार्ग पर चलना सिखाया वह दयानन्द सरस्वती कहलाया", दयाशंकर कश्यप ने " हे दयानन्द सरस्वती आपको वंदन बारंबार " कविता सुनाई। विनोद कुमार त्यागी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आर्य समाज में आयोजित कार्यक्रम का दृश्य केसरी।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर अप्रैल–२०२३

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

(आवश्यक सूचनायें तथा नियमावली)

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में चैत्र कृष्ण ५ से चैत्र कृष्ण १२ २०७७ तदनुसार ९ से १६ अप्रैल तक ८ दिन के क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन " मुनि सत्यजित् जी " की अध्यक्षता में किया जा रहा है । इस में आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ–साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम–नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक–वैराग्य–अभ्यास, जप–विधि, ईश्वर–समर्पण, स्व–स्वामी सबंध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः ४ से रात्रि ९:३० बजे तक रहेगी।

प्रशिक्षक :– (१) स्वामी विष्वङ् जी (२) मुनि सत्यजित् जी (३) आचार्य सन्दीप जी (४) आचार्य सत्येंद्र जी (५) मुनि ऋतमा जी (६) आचार्य नवानन्द जी (७) आचार्य गौतम जी

नियम :–

१) मंत्रपाठ, श्लोकगायन व कक्षाओं को छोड़ करके शिविरार्थियों को दिनभर मौन का पालन करना होगा।
२) कम से कम १० (दसवीं) कक्षा तक की योग्यता हो, पूर्ण अनुशासन में चलने वाला तथा तपस्वी हो।
३) १५ से ९० वर्ष तक आयु वाले स्त्री–पुरुष भाग ले सकते हैं।
४) शिविरार्थी अपने साथ नित्योपयोगी वस्तुएं, औषधि, करदीपक (टॉर्च), पेन, नोटबुक आदि लावें। शिविर में प्रयोग हेतु सादे वस्त्र (सफेद अथवा पीले) लावें । छोटे बच्चे, कीमती सामान, रेडियो, खाद्य सामग्री आदि अपने साथ न लावें। यदि कोई कीमती सामान,खाद्य सामग्री आदि साथ में हो तो शिविर से पूर्व कार्यालय में जमा कर देवें।
५) शिविरार्थियों को शिविर काल में चलभाष (मोबाईल) करने की अनुमति नहीं रहती है, चलभाष कार्यालय में जमा करवाना होता है। किसी को बहुत आवश्यक होगा तो स्वीकृति लेकर कार्यालय से फोन कर सकेंगे।
६) रोगी (विशेषतः खांसी–जुकाम, जोडों के दर्द, उदरवायु की अधिकता वाले), अशक्त, वृध्द, धूम्रपान आदि व्यसनों वाले व्यक्ति कृपया शिविर में भाग लेने के लिए आवेदन न करें।
७) दूर से आने वाले शिविरार्थी अपना वापसी का यात्रा आरक्षण पूर्व ही करा लेवें।
८) आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाते हैं तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जाती है। पुरुष और महिलाओं की पृथक एवं सामूहिक आवास व्यवस्था रहती है।
९) शिविर शुल्क प्रति व्यक्ति २०००/–रुपये है, जिसे आवेदन के साथ पहले ही जमा करना होता है। स्थानाभाव, अयोग्यता अथवा अन्य किसी कारण से प्रवेश न देने की स्थिति में शिविर शुल्क २००० रुपये लौटा दिया जाता है। स्वीकृति प्राप्त शिविरार्थियों के न आने पर शुल्क लौटाया नहीं जाता है।
१०) बिना स्वीकृति के शिविर में आ जाने वालों को स्थान होने पर ही स्वीकृति दी जाती है, साथ ही उन्हें शिविर शुल्क २०००₹ के स्थान पर २५००₹ देना होता है।
११) जो शिविरार्थी आर्थिक कठिनाई के कारण शुल्क देने में असमर्थ होंगे उनके आवेदन करने पर योग्य जानकर शुल्क में आंशिक या पूर्ण छूट दी जा सकती है।
१२) पंजीकरण ३१ मार्च २०२३ तक करवा लेवें। पंजीकरण की स्वीकृति होने पर आपको भेजा जाने वाला शिविर प्रवेश पत्रक साथ में अवश्य लायें।
१३) शिविरार्थी ९ अप्रैल २०२३ को प्रातः ९ बजे से सायंकाल ४ बजे के बीच शिविर स्थल पर पहुँच जावें। कृपया इससे पूर्व व पश्चात् न पहुँचें, ऐसा करने से व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है। शिविर में अन्तिम दिन तक उपस्थित रहना होता है।
१४) शिविरकाल में शिविर स्थल से बाहर जाकर जिन्हें आर्यवन को देखना हो या अन्यों से मिलना, चर्चा, परामर्श आदि करने हों वे प्रथम दिन ९ अप्रैल को सायं ४ बजे से पहले–पहले या अंतिम दिन १ बजे के बाद कर सकते हैं। यदि आपको अपने घर पर अथवा परिजनों को रोजड़ पहुँचने की सूचना देनी हो तो कृपया पंजीकरण से पहले ही दे देवें।

शिविर शुल्क २०००₹ कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करें।
नाम :– वानप्रस्थ साधक आश्रम, खाता क्र. 01790100006699
शाखा : बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा (जि. अरवल्ली) IFSC NO. BARBODHANSU

जमा की सूचना इस प्रकार दें :–शिविर शुल्क जमा की बैंक आदि की रसीद का चित्र इस id पर मेल कर दें-vaanaprastharojad@gmail.com या 09427059550 पर व्हाट्सएप कर दें या उसकी फोटोकॉपी आश्रम के पते पर डाक से भेज दें ।

वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए लगाई प्रदर्शनी

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

कोटा। आर्य समाज वैदिक साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए सदैव तत्पर व प्रयत्न करता रहता है। इसी संदर्भ में नव संवत्सर व भारतीय नववर्ष की पूर्व संध्या पर किशोर सागर तालाब की पाल कोटा पर आयोजित कार्यक्रम व धार्मिक मेले में आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी लगाई गई। इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए आर्य समाज कोटा के मीडिया प्रभारी अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि आज आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के निर्देशन में युवा प्रभारी किशन आर्य हरियाणा तथा नरेंद्र शर्मा के सानिध्य में आर्य समाज द्वारा किशोर सागर तालाब की

पाल पर वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में चारों वेदों के सेट, हिंदी अंग्रेजी में महर्षि दयानंद सरस्वती रचित सत्यार्थ प्रकाश, हिंदी अंग्रेजी में गो करुणानिधि, संस्कार विधि, वैदिक नित्य कर्म विधि, महापुरुषों के जीवन चरित्र, ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका तथा सुखी गृहस्थी आदि विषयों से संबंधित वैदिक व धार्मिक साहित्य बिक्री व अवलोकन के लिए रखवाए गए। प्रदर्शनी के बारे में युवा प्रभारी किशन आर्य हरियाणा ने बताया कि इस अवसर पर कोटा के पूर्व सांसद इज्यराज सिंह जी, भाजपा शहर जिला अध्यक्ष रामबाबू सोनी, आदि उपस्थित थे। इस प्रकार के वैदिक साहित्य को आमजन तक उपलब्ध कराने के लिए आर्य समाज के इस कार्य की सराहना की की गई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा आवश्यक वैदिक साहित्य व ओम के झंडे इत्यादि क्रय किए।

वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया!

सादर नमन,

आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

आपकी "आर्यावर्त केसरी" की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु **वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/-** अथवा **आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/-** निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी
खाता संख्या : 30404724002
IFSC कोड : SBIN0000610

शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग

राशि जमा करने के उपरांत **मो. नं. 9412139333** अथवा **7017448224** पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके **"जन्म - दिवस"** के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद

शुभाकांक्षी-
कृते आर्यावर्त केसरी/ "प्रभारी-प्रसार"

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना शिविर होगा 3 जून से

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2023 इस बार हरियाणा में दिनांक 3 से 11 जून 2023 तक लगाया जाएगा। शिविर के स्थान की सूचना बाद में दी जाएगी। यह जानकारी देते हुए संचालिका मृदुला चौहान ने बताया कि इस शिविर में भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनायें दिनांक 20 मई 2023 तक अपने नाम अग्रांकित मोबाइल नंबर 87504 82498 , 98107 02760 , 99102 34595 अथवा 98102 74318 पर अंकित करा दें, ताकि सुचारू व्यवस्था हो सके।

आर्यावर्त केसरी

आर्यजगत की गतिविधियाँ

पाक्षिक हिन्दी समाचार पत्र,
अमरोहा (उत्तर प्रदेश)
01 से 15 अप्रैल 2023

अंतिम से पूर्व पृष्ठ

तपोवन आश्रम में आयोजित सामवेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

देहरादून। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून की पर्वतीय इकाई में 10 दिवसीय सामवेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन 10 मार्च, 2023 से आरम्भ हुआ था। यह आयोजन सफलतापूर्वक आज रविवार दिनांक 19-3-2023 को सम्पन्न हुआ। आज रविवार दिनांक 19 मार्च, 2023 को ही इस महायज्ञ की पूणार्हुति सम्पन्न हुई। यज्ञ पांच यज्ञ वेदियों में किया गया। गायत्री मन्त्र से यज्ञ में कुल एक लाख पच्चीस हजार आहुतियां दी गईं। पांचों यज्ञ वेदियों पर आज 15 से 18 लोग बैठकर आहुतियां दे रहे थे। कुछ लोग यज्ञवेदियों के निकट बैठकर मन्त्रोच्चार सुन रहे थे और स्वाहा का उच्चारण कर रहे थे। हमने भी मन्त्रोच्चार को सुना और उसके पदों को समझने का प्रयत्न किया। यज्ञ की पूणार्हुति के बाद यज्ञ के ब्रह्मा डा. वेदपाल, अजमेर ने परमात्मा का यज्ञ को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने आश्रम के अधिकारियों सहित याज्ञिकों का भी धन्यवाद किया। आचार्य वेदपाल जी ने चार वेदपाठियों का भी उनके महत्वपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद किया। यज्ञ की पूणार्हुति के बाद स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने सामूहिक प्रार्थना कराई।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने परमात्मा को सम्बोधित कर कहा कि आप हमें कृपया उदार बनायें। आप की महान कृपा के लिए आपका पुनः पुनः वन्दन एवं धन्यवाद। स्वामी जी ने कहा कि सूर्य के होने से प्रकाश होता है। सूर्य और उसका प्रकाश भी हे परमेश्वर आपकी ही देन है। परमात्मा की कृपा से ही हमें मनुष्य योनि में जन्म मिला है। आपने सृष्टि की आदि में पवित्र चार वेदों का ज्ञान हमारे पूर्वज चार ऋषियों को दिया था। समय बीतने के साथ हम वेदों के ज्ञान से दूर हो गये। दुर्भाग्यवश एवं अपने आलस्य व प्रमादवश हम अंग्रेजों व यवनों के गुलाम हो गये। आपकी कृपा और हमारे सौभाग्य से देश में ऋषि दयानन्द जी का जन्म हुआ। स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द के गुणों एवं कामों का वर्णन किया। स्वामी जी ने परमात्मा से प्रार्थना की हमारे देश में बड़ी संख्या में ऋषियों का जन्म हो जिससे देश में वैदिक युग एवं वैदिक परम्परायें लौट सकें। हम उदार हों तथा हमारे सभी देशवासी भी आपकी तरह उदार हो। हम अपने जीवन का उत्कर्ष कर पायें। स्वामी जी ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व उनकी सरकार के कार्यों की प्रशंसा भी की। उन्होंने प्रार्थना कर कहा कि वह सुरक्षित रहें। हमारा देश उनके नेतृत्व में सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ता रहे। वैदिक युग पुनः लौटे। हमारा प्यारा वैदिक साधन आश्रम तपोवन भी आपकी कृपा से उन्नति करे। स्वामी जी ने कहा कि उनका अनुभव है कि तपोवन की यह भूमि वा स्थान साधना व उपासना करने के लिए अत्यन्त पवित्र एवं दुर्लभ स्थान है। इसका लाभ आश्रम व इतर साधकों व उपासकों को उठाना चाहिये।

स्वामी जी ने अपनी सामूहिक प्रार्थना को विराम देते हुए ईश्वर से सब देशवासियों के कल्याण की कामना की। इसके बाद यज्ञ के ब्रह्मा डा. वेदपाल जी ने आशीर्वाद के वैदिक वचन बोले और गुरुकुल के एक ब्रह्मचारियों ने सभी याज्ञिकों को जल छिड़क कर आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद देते हुए आचार्य डा. वेदपाल जी ने सबके यशस्वी होने की कामना की।

सामूहिक प्रार्थना के बाद पं. आर्यमुनि जी का एक भजन हुआ

जिसके बोल थे ह्यदर्द दिल की दुवायें बुला रही हैं तुम्हें, ये प्यार की राहें बुला रही हैं तुम्हें।ह्न यज्ञ में पधारी एक साधिका बहिन सुमन जी ने भी एक भजन सुनाया जिसके बोल थे ह्यबड़ी श्रद्धा से तू प्यारे प्रभु प्यारे के गीत गाया कर। उसी के नाम की बस्ती सदा मन में बसाया कर।ह्न दोनों भजनों को श्रोताओं ने मस्ती में भरकर सुना। भजनों के बाद आश्रम के मन्त्री श्री प्रेमप्रकाश ने कहा कि आश्रम में विगत 25 वर्षों से निरन्तर प्रत्येक वर्ष गायत्री महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न हो रहा है। यज्ञ में प्रत्येक वर्ष एक लाख व उससे अधिक आहुतियां डाली जाती है। इस वर्ष यज्ञ में देश के सुदूर भागों के लोग बड़ी संख्या में पधारे हैं। इस बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति पर मंत्री जी ने प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हमारा इस वर्ष का यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। उन्होंने परमात्मा, सभी विद्वानों एवं याज्ञिकों का हृदय से धन्यवाद किया। इस सम्बोधन के बाद आश्रम के धर्माधिकारी पं. सूरतराम शर्मा एवं प्राकृतिक चिकित्सक स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी के सम्बोधन हुए। इन सम्बोधनों को हम एक पृथक लेख में अपने मित्र पाठकों के लिए प्रस्तुत करेंगे।

कार्यक्रम के समापन से पूर्व यज्ञ के ब्रह्मा डा. वेदपाल जी का सम्बोधन हुआ। अपने सम्बोधन में डा. वेदपाल जी ने कहा कि मनुष्य बिना प्रयोजन के किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। पशु व पक्षी भी बिना प्रयोजन के कोई कार्य नहीं करते। मनुष्य की आत्मा की मुक्ति मनुष्यजीवन का उद्देश्य व प्रयोजन है। आचार्य जी ने प्रश्न किया हम मुक्ति से पूर्व कैसे बैठे? उन्होंने कहा कि हमें पवित्रता के लिए बैठना है। पवित्र भाव से बैठना है। हमें बैठकर ईश्वर का ध्यान व उसकी स्तुति करनी है। हमें परमात्मा की स्तुति व ध्यान करना है जो जीवन संघर्षों में हमारी रक्षा कर सके। आचार्य जी ने कहा कि मिलकर बैठने से परस्पर मित्रता बढ़ती है। विचारों में भिन्नता मिलकर न बैठने में सबसे बड़ी बाधा है। साथ-साथ न बैठने से संघर्ष पैदा होता है। आचार्य जी ने द्वितीय विश्व युद्ध एवं इसमें भाग लेने वाले मित्र राष्ट्रों की चर्चा की। आचार्य वेदपाल जी ने कहा कि युद्ध में सेना उन सैनिकों को मारती है जिस सेना के प्रति मैत्री का भाव नहीं होता। उन्होंने कहा कि यदि मित्र भाव नहीं होगा तो समाज जीवित नहीं रह सकता। आचार्य जी ने कहा युद्ध आवश्यक है। युद्ध कायरता को नष्ट करता है। समाज में छायी कायरता युद्ध से मिटती है। युद्ध से पराक्रम बढ़ता है। लोग मित्र भाव से रहे, यह भी युद्ध का कारण होता है।

आचार्य डा. वेदपाल जी ने कहा कि वेद का सन्देश है कि मैत्री का विस्तार करो। ऐसा होने पर युद्ध की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आचार्य जी ने सन्तोष शब्द की चर्चा और इसके वास्तविक अर्थ पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने अपरिग्रह की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि जब सब लोग सन्तोष एवं अपरिग्रह आदि को धारण कर लेंगे तो संसार में युद्ध नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्यों को अपने सामने वाले मनुष्य को अपने जैसा समझना चाहिये। इससे समाज में मैत्री बढ़ेगी। इसी के साथ आचार्य जी ने अपने सम्बोधन को विराम दिया। इसके बाद आश्रम की ओर से आचार्य डा. वेदपाल जी का शाल आदि से सम्मान किया गया। आश्रम के सभी कर्मचारियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए रात दिन तप किया। आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने सभी कर्मचारियों के कार्यों की सराहना की और उन्हें एक-एक शाल आदि वस्तुयें देकर सम्मानित किया। आश्रम के उपाध्यक्ष आहुजा जी ने कार्यक्रम में प्रत्येक व्यक्ति व समूह के योगदान का उल्लेख कर प्रशंसा की और सबका धन्यवाद किया। इसी के साथ सामवेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न हो गया। इसके बाद सभी लोगों ने भूमि पर साथ-साथ बैठकर भोजन वा प्रसाद लिया और सब याज्ञिक अपनी अपनी गाड़ियों व साधनों से विदा लेकर अपने निवास-स्थानों की ओर प्रस्थान कर गये। यह भी बता दें कि आश्रम का आगामी ग्रीष्मोत्सव 10 मई से 14 मई, 2023 तक आयोजित किया जा रहा। यह आयोजन आध्यात्मिक उन्नति का एक महत्वपूर्ण अवसर होता है। सभी बन्धुओं को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिये और इस आयोजन में सम्मिलित होना चाहिये।

-मनमोहन कुमार आर्य

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर,सुशील,गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या,कद 5ft. रंग- Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष,संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता। सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

वधू चाहिए

सोलन हिमाचल प्रदेश के प्रतिष्ठित मित्तल वैश्य परिवार के 30 वर्षीय युवक (5 फुट 8 इंच) योग्यता बीबीए/एमबीए निजी व्यवसाय । अच्छी आय। शुद्ध शाकाहारी हेतु संस्कारवान युवक के लिए सुयोग्य, सुशिक्षित, सुंदर, सुशील , संस्कारवान वधू चाहिए। जाति बंधन नहीं। संपर्क सूत्र : मो. 8360658863

बारह पत्थर मैदान में 8 अप्रैल से होगा स्वामी रामदेव का विशाल योग विज्ञान चिकित्सा शिविर

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)
कासगंज (उत्तर प्रदेश)। विश्व प्रसिद्ध योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज का विशाल एवम् भव्य योग विज्ञान चिकित्सा शिविर दिनांक 8, 9 व 10 अप्रैल 2023 को कासगंज के प्रसिद्ध बारा पत्थर मैदान में होने जा रहा है। यह जानकारी देते हुए पतंजलि योगपीठ के प्रभारी श्री जे.सी. चतुर्वेदी ने बताया कि इस योग शिविर की तैयारियां युद्ध स्तर पर की जा रही है। इतना भव्य एवं विशाल योग शिविर जनपद कासगंज में पहली बार संपन्न होने जा रहा है।

अनुशासन व निरंतर अभ्यास से मिलती है सफलता

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)
आर्य नगर (हिसार) सीताराम आर्य।

आर्य समाज, आर्यनगर का साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग कार्यक्रम परंपरागत ढंग से संपन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञमान के आसन पर विराजमान निलेश कुमार आर्य ने सब जनों के साथ यज्ञ में घी की आहुतियां प्रदान की एवं श्री सीताराम आर्य ने विधिवत यज्ञ सम्पन्न करवाया।

कार्यक्रम में अनेकों गीत भी प्रस्तुत किए गए। एक गीत (आओ मिलके विचार करे.....) वन्दिता आर्या ने व एक गीत (लिया जिन्दगी में जिसने प्रभु नाम का सहारा....) सबने मिलकर गाया। श्री आर्य जी ने अनुशासन व निरन्तर अभ्यास से सफलता विषय को लेकर सभी बच्चों को प्रेरणा दी। विवान आर्य ने अपना परिचयात्मक उद्बोधन दिया । समापन पर सबने श्री जयसिंह आर्य जी द्वारा की गई प्रसाद व्यवस्था व श्री रामसिंह आर्य द्वारा अपने सुपुत्र चि० अशोक कुमार आर्य के शुभ विवाह उपरान्त प्राप्त मिठाई/प्रसाद का आनंद लिया।

विधि विधान से किया पारिवारिक यज्ञ

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

आर्य नगर /सीताराम आर्य। दिनांक 27 मार्च 2023 को श्री विकास कुमार जांगड़ा (बोदलिया) के घर पर विधि विधान से पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा श्री सीताराम आर्य ने कहा कि यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। यह संगतिकरण देव पूजा तथा दान से मिलकर बनता है। इस अवसर पर सभी परिवार जनों ने बड़ी श्रद्वा से हवन में आहुतियां प्रदान की। कार्यक्रम में ऋषियों के देश आर्यावर्त/ भारत भूमि की संस्कृति एवं हवन की उपयोगिता, महत्व और विशेषताओं पर बहुत सुन्दर उपदेश किया गया।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का 116वां वार्षिकोत्सव 31 मार्च से

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

ज्वालापुर (हरिद्वार)। तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य जनों की प्रिय संस्था गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर का 116 वां उत्सव 31मार्च से 2 अप्रैल 2023 तक गुरुकुल परिसर में समारोह पूर्वक हो रहा है। इस अवसर पर देश के प्रमुख संन्यासी, मूर्धन्य विद्वान, राजनेता और मनीषी पधार रहे हैं।

वार्षिक उत्सव में वेद सम्मेलन, योग आयुर्वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा सांस्कृतिक सम्मेलन आदि सहित अनेकों सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा व्यायाम एवं शक्ति प्रदर्शन भी किया जाएगा। आयोजन समिति ने जनता जनार्दन से इस भव्य कार्यक्रम में सहभागिता की अपील की है।

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
वीरेन्द्र सिंह
(मोबा. : 8755268578)
साहित्य सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

आर्यावर्त केसरी के प्रसार, विज्ञापन तथा समाचार आदि के सम्बन्धी किसी भी सूचना अथवा शिकायत के लिए कृपया इस नंबर पर सम्पर्क करें-
8755268578
वीरेन्द्र सिंह
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित। सम्पादक- डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी, मो0- 9412139333
E-mail :
aryawartkesari@gmail.com

नव संवत्सर एवं आर्य समाज के 149वें स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं

स्त्री आर्य समाज, अमरोहा

श्रीमती निर्मल विरमानी
प्रधाना

श्रीमती (डॉ.) बीना शर्मा,
मंत्राणी

श्रीमती अचला टंडन,
कोषाध्यक्षा

श्रीमती उषा आर्या,
संरक्षिका

श्रीमती शशि जैन
अध्यक्ष नगर पालिका परिषद अमरोहा उत्तर प्रदेश

गृहकर एवं जलकर की अदायगी समय पर करें
इधर कूड़ा न फैलायें
रोगों से बचाव के लिए आसपास जलभराव न होने दें
नगर के विकास में अपना सहयोग करें।

अग्रणी हैं ऋषि दयानन्द

पराधीनता के काल में जब देश अपने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आधार के संबंध में दिग्भ्रमित हो रहा था, तब महर्षि दयानंद सरस्वती का आगमन हुआ। उस काल में उन्होंने राष्ट्र के आध्यात्मिक अधिष्ठान को सुखद करने हेतु वेदों की ओर लौटने का उद्घोष कर समाज को अपनी जड़ों के साथ पुनः जोड़ने का अद्भुत कार्य किया। समाज को बल व चेतना प्रदान करने तथा समय के प्रभाव में आई कुरीतियों को दूर करने वाले महापुरुषों की श्रृंखला में महर्षि दयानंद सरस्वती अग्रणी हैं।

आचार्या (डॉ.) सुमेधा प्राचार्या

श्रीमद दयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा (अमरोहा) उत्तर प्रदेश

महर्षि दयानंद के जाने से क्षति

स्वामी दयानंद जी सच्चे और उच्च कोटि के सिद्ध योगी थे यह संभव था कि यदि उनका कोई भक्त योग साधना समाधि आदि के अनुभव पर ग्रंथ लिखने का आग्रह करता तो वह इस कार्य को अवश्य पूरा करते। इस कार्य के संपन्न होने पर उनका यह कार्य संसार के साहित्य में एक अपूर्व ग्रंथ हो सकता था। इससे भी हमारा देश व समाज वंचित हुआ है स्वामी जी के मस्तिष्क में अनेक ऐतिहासिक तथ्य उनके साथ ही चले गए

आचार्य देवदत्त
संचालक- वैदिक स्वर्ग आश्रम गुरुकुल ट्रस्ट सिसौली गढ़ रोड़ मेरठ उत्तर प्रदेश

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के वैचारिक दर्शन के केंद्र में समाज का परिष्कार और परिशोधन है। समाज के धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में आई कुरीतियों का निराकरण स्वामी जी के चिन्तन का प्रमुख विषय रहा है। वे प्रख्यात व्याकरण मर्मज्ञ लेखक, वेदों के विद्वान, संन्यासी, योगी, आध्यात्मिक नेता, धार्मिक सुधारक, भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थानवादी पुरोधा, राष्ट्रभक्त, दार्शनिक-शिक्षक, समाज सुधारक, क्रांतिकारी विचारक, शिक्षाविद्, भारत के शैक्षिक पुनर्जागरण की आधारशिला के स्तम्भ व कर्मयोगी थे। महर्षि दयानंद सरस्वती उन महान संतों में अग्रणी हैं जिन्होंने देश में प्रचलित अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, विभिन्न प्रकार के आडंबरों व सभी अमानवीय आचरणों का विरोध किया। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने तथा हिंदू धर्म के उत्थान व इसके स्वाभिमान को जगाने हेतु महर्षि जी के महत्वपूर्ण योगदान के लिए भारतीय जनमानस सदैव उनका ऋणी रहेगा।

आचार्य डॉ कपिल मलिक (भारत भूषण)
सञ्चालक आर्यवीरदल मेरठ

आचार्य डॉ कपिल मलिक
"भारत भूषण"
संचालक
आर्य वीर दल,
मेरठ (उत्तर प्रदेश)